लेखक : शंकर

चित्रकार : रेवतीभूषण

भुना हुआ मक्का

एक बार किसी किसान की पत्नी को उसकी मां ने बाल्टी भर भुना हुआ मक्का भेजा। उसने कुछ अपने पति को दे दिया। किसान को मक्का बहुत अच्छा लगा।

"देखो," उसने अपनी पत्नी से कहा, "बाकी मक्का सम्भाल कर रखना। हम उसे खेत में बो देंगे तो अच्छी फसल होगी।"

किसान ने खेत में हल चलाया और भुना हुआ मक्का बो दिया।
उसे आशा थी कि अब खूब अच्छी फसल होगी।
वह कई दिनों तक मक्का उगने की प्रतीक्षा करता रहा लेकिन खेत में एक पौधा भी न उगा। उसे बड़ी निराशा हुई।
उसकी मूर्खता पर पड़ोसी हंसते-हंसते दोहरे हो गये।

देहाती की गाय

एक गांव वाले के पास एक गाय थी। वह प्रतिदिन पांच किलो दूध देती थी। देहाती दूध बेच कर उस पैसे से मज़े से रहता था।
गांव के पास ही कहीं विवाह हो रहा था। लोग उस देहाती के पास यह पता लगाने आये कि वह विवाह के समय उन्हें कितना दूध दे सकेगा।
''आपको कितना दूध चाहिये? मैं आपको उतना ही दे दूंगा,'' देहाती बोला।
''क्या तुम पचास किलो दूध दे सकते हो?'' उन लोगों ने पूछा।
''हां, इसमें कोई मुश्किल नहीं।''
''तो ठीक है। हम तुम पर भरोसा करें न?''
''आपको दूध कब चाहिये?''
''दूध हमें पन्द्रह दिन बाद चाहिये।''

''दूध आप को तैयार रखा मिलेगा। किसी को भेज कर मंगवा लीजिएगा,'' देहाती बोला।
उस दिन से देहाती ने गाय को खूब खिलाना-पिलाना आरम्भ कर दिया और दूध दोहना भी बन्द कर दिया। वह गाय के पेट में ही पचास किलो दूध इकट्ठा करना चाहता था।
निश्चित दिन पर जब वे लोग दूध लेने आये तो वह गाय दोहने बैठा। लेकिन उसे दूध की एक बूंद भी न मिली।
जिन लोगों ने उसकी मूर्खता की बात सुनी वे अपनी हंसी न रोक सके।
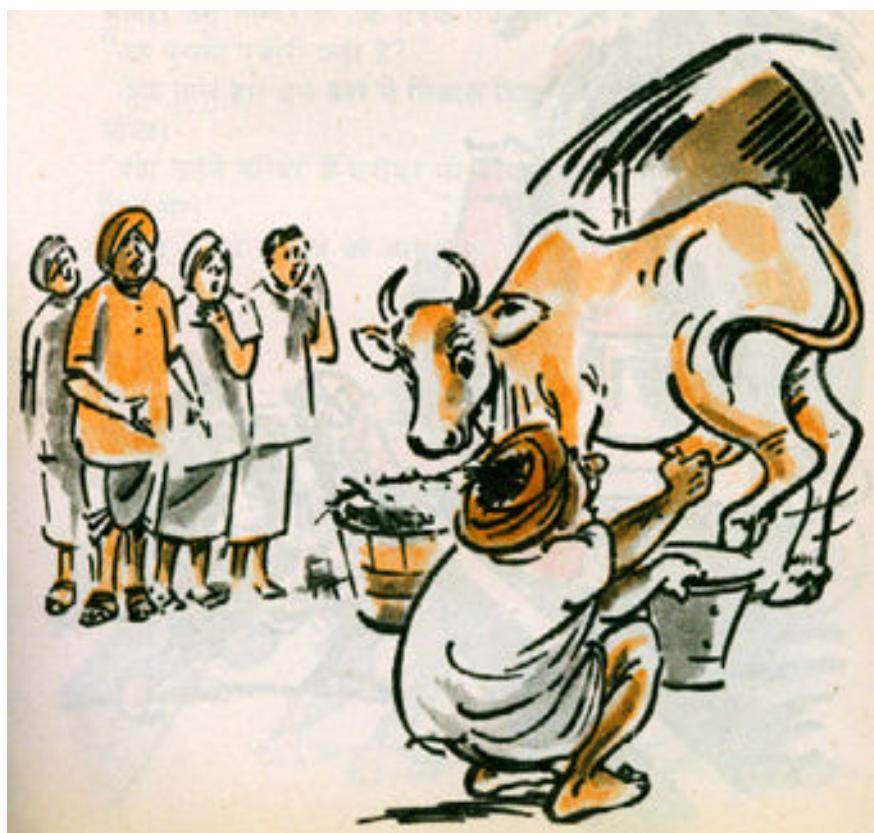
मूर्ख पुजारी

बच्चे एक मन्दिर के सरोवर में नहा रहे थे। वे पानी में खेलते हुए खूब शोर मचा रहे थे। पुजारी को यह अच्छा नहीं लग रहा था। वह बच्चों पर चिल्लाने लगा और उन्हें सरोवर से बाहर भगा दिया।

मन्दिर का मालिक पुजारी की इस हरकत से बड़ा परेशान हुआ और उसने पुजारी को निकाल दिया।
पुजारी को इस बात पर बड़ा गुस्सा आया। वह बदला लेना चाहता था। अपना सामान बांधने के बाद पुजारी ने एक बड़ी-सी मशाल बनाई। फिर वह रात की प्रतीक्षा करने लगा
आधी रात के समय वह वहां से चला। रास्ते में उसने मशाल जला ली। तालाब के एक कोने में उसने जलती मशाल रख दी और सिर पर पैर रख कर भाग गया।
कुछ वर्ष बीत गये। पुजारी सन्यासी के वेश में उसी गांव में आया। उस मन्दिर के एक सेवक से मिला। उसने उससे पूछा,
"वह पुराना पुजारी कहां है?"
"कुछ साल हुए उसे यहां से निकाल दिया गया था," नौकर बोला।
"क्या उसने मन्दिर के सरोवर को आग लगा कर नष्ट नहीं कर दिया था?"
"पानी के भरे तालाब को आग लगा कर?" सेवक ने हंसते हुए कहा।

खजूर का पेड़

गांव में खजूर के पेड़ों का एक बगीचा था।
एक दिन खजूर का एक पेड़ गिर पड़ा। कुछ गांव वालों ने खजूरें एकत्र कर लीं। अच्छी तरह से बांध कर उन्होंने उस पैकेट को राजा के पास उपहार के तौर पर भेज दिया।
राजा को खजूरें पसन्द आईं। उसने गांव वालों को धन्यवाद कहला भेजा।

राजा के धन्यवाद से उत्साहित होकर गांव वाले राजा को और खजूरें भेजना चाहते थे। लेकिन यह कैसे संभव हो? वे इस बारे में बहुत सोचते रहे। इन पेड़ों को गिरा कर ही खजूरें भेज सकते थे। बस, उन्होंने पेड़ काट डाले। खजूरें इकट्ठी करने के बाद उन्होंने खजूर के पेड़ों को फिर खड़ा करना चाहा।
आसपास के लोग उनकी मूर्खता देख कर खूब हंसे।

ससुराल में

एक युवक अपने विवाह के पश्चात् पहली बार ससुराल गया। उसे बहुत भूख लगी थी। एक कमरे में घुसने पर वहां एक बड़े बर्तन में कच्चे चावल पड़े देखे। उसने मुट्ठी भर चावल उठा कर मुंह में डाल लिये।

उसी समय उसकी सासु वहां आ गई। युवक को बड़ी लज्जा आई। अब न तो वह चावल निगल सकता था और न ही उन्हें थूक सकता था। मुंह में चावल भरे होने के कारण वह बोल भी नहीं पा रहा था।

सासु मां ने उसके फूले गाल देखकर परेशान हो अपने पति को बुलाया। अपने दामाद की यह दशा देखकर उसने तुरन्त वैद्य को बुला भेजा।
वैद्य को सन्देह हुआ कि कोई भीतरी गांठ है। उसने युवक का सिर पकड़ कर उसका मुंह जबरदस्ती खोला तो चावल के दाने बाहर आ गये।
आसपास खड़े लोग हंसते-हंसते लोटपोट हो गये।

ऐसे पहने गहने

एक नवविवाहित युवक ने अपने घर के पास गढ़ा खोदा। उसे गढ़े में से कुछ आभूषण मिले। उन्हें पा कर वह बहुत खुश हुआ और सारे गहने अपनी युवा पत्नी को दे दिये।
उन दोनों में से किसी ने भी इससे पहले इतने सुन्दर गहने नहीं

देखे थे। वे यह भी नहीं जानते थे कि उन्हें कैसे पहना जाता है। गांव में मेला लगा था, दोनों ने वहां जाने का निश्चय किया। पत्नी ने पति की सहायता से सारे गहने पहन लिए। हाथ के कंगनों को उसने कानों में पहना। गलहार को कमर में करधनी की तरह पहन लिया, करधनी को सिर पर लपेट लिया और पायलों को बाजुओं में।

जब वे मेले में पहुंचे तो लोग यह अजीब श्रृंगार देख कर हंसते-हंसते लोट-पोट हो गये।

मीठे आंवले

एक जमींदार ने एक नया नौकर रखा। उसने नौकर को बुलाकर कहा, "मुझे मीठे आंवले बहुत अच्छे लगते हैं। तुम बगीचे में जाकर जितने भी मीठे आंवले मिलें चुन कर टोकरी में डाल मेरे पास ले आओ।"

सेवक बगीचे में गया और देखा कि वहां बहुत से आंवले हैं। लेकिन उसे पता कैसे चले कि वे मीठे हैं या नहीं।

उसने इसके लिए एक युक्ति सोची। 'क्यों न एक चख कर देख लूं', उसने एक आंवला लिया और ज़रा-सा कतर कर देखा।

'यह तो मीठा है लेकिन बाकियों का क्या पता?' उसने स्वयं से ही

पूछा। 'चलो बाकी भी चख कर देखूं। नहीं तो कैसे पता चले कि आंवले मीठे हैं या नहीं।'
थोड़ी देर में उसने ढेर सारे आंवले जमा कर लिये। उन्हें एक टोकरी में रख कर जमींदार के पास ले गया।
"देखिये, मालिक," वह बोला, "ये सब आंवले बहुत मीठे हैं।"
"तुम कैसे जानते हो?"
"मैंने सब को चखा है।"
जमींदार ने देखा कि सारे आंवले आधे-आधे खाये हुए हैं। उसने गुस्सा होकर नौकर को उसी समय निकाल दिया।

देहाती और उसका बेटा

एक देहाती ने अपने बेटे से कहा, ''मैं चाहता हूं कि कल तुम सुबह-सुबह शहर जाओ।''
''ठीक है पिताजी। मैं वापस कब तक आऊं?''
''शाम तक।''

अगली सुबह देहाती के उठने से पहले ही लड़का शहर चला गया। वह भागता हुआ वापस आया और शाम तक गांव पहुंच गया।

''तुमने शहर में क्या किया?''

''आपने मुझे शहर जाकर वापस आने के लिये कहा था,'' लड़के ने कहा, ''और मैंने वही किया।''

दो शिष्य

एक अध्यापक ने अपने दो छात्रों से अपनी टांगों की मालिश करने और हर शाम उन्हें गर्म पानी से धोने के लिए कहा। प्रत्येक छात्र एक टांग का जिम्मेदार था। दोनों छात्र नियमित रूप से अपनी टांग की मालिश करते और उसे गर्म पानी से साफ करते।
एक दिन एक छात्र को अपने गांव जाना पड़ा। अध्यापक ने दूसरे छात्र से दूसरी टांग भी मालिश करने के लिए कहा।
"मैं दूसरी टांग की मालिश नहीं कर सकता। यह काम दूसरे लड़के का है," वह बोला।
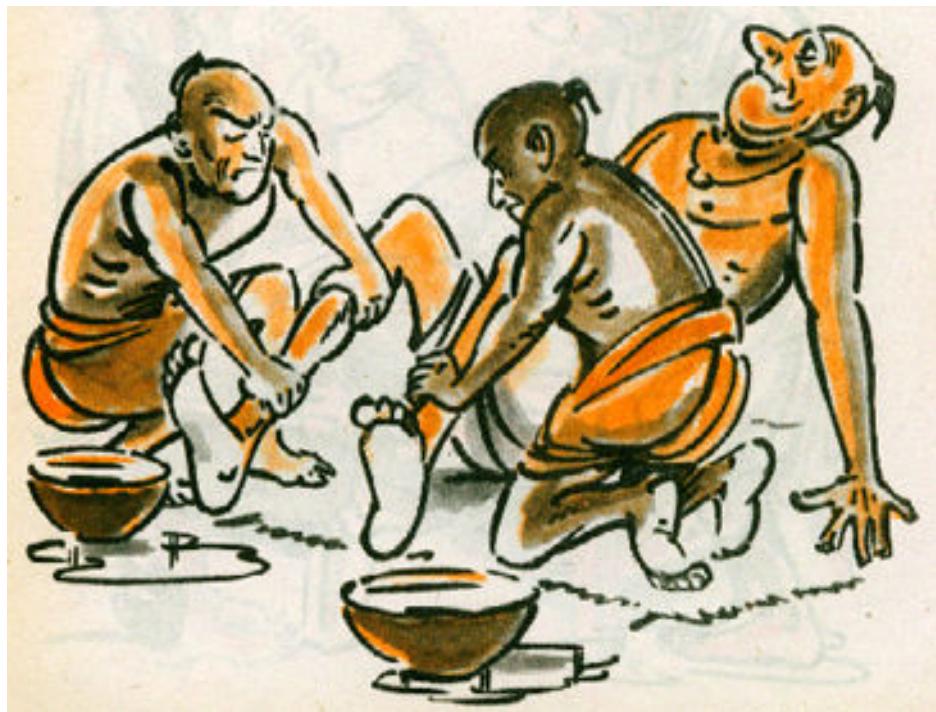
लेकिन अध्यापक ने हठ किया। इसलिए उसने दूसरी टांग की मालिश भी कर दी। लेकिन उसने इस टांग पर इतना जोर लगाया कि वह कई जगह से सूज गई।
अध्यापक ने टांग पर पट्टी बंधवाई। वह पीड़ा से परेशान था। जब दूसरा छात्र अगले दिन काम से लौटा और देखा कि क्या हुआ है तो उसे बड़ा गुस्सा आया। अपने वाली टांग की मालिश करते-करते उसने पत्थर उठाकर दूसरी टांग पर ऐसे मारा कि वह भुरता बन गई।दर्द के मारे अध्यापक का बुरा हाल हो गया।

चन्दन की लकड़ी

एक धनी व्यापारी का बेटा अपने पिता का व्यवसाय करना चाहता था। वह एक दूर गांव के मेले में गया और बेचने के लिये कई चीज़ें खरीद लाया। उसमें चन्दन की सुगन्धित लकड़ी के शहतीर भी शामिल थे।

कुछ दिन बाद दूसरे मेले में जाकर उसने चन्दन की लकड़ी के सिवाय सब कुछ बेच दिया।

एक दुकान में उसने देखा कि कोयला हाथों-हाथ बिक रहा है। उसके मन में एक विचार आया। उसने अपनी चन्दन की लकड़ियों में आग लगा दी और उनका कोयला बन जाने पर बेच दिया। घर आने पर वह अपनी होशियारी की शेखी मार रहा था और लोग हंसते-हंसते लोटपोट हो रहे थे।

कीमती थैलियां

एक व्यापारी अपने नौकर-चाकरों सहित एक ऊंट पर कीमती कपड़ों से भरे चमड़े के थैले लाद कर यात्रा पर निकला। सौदागर ने सोचा कि इतना वजन एक ऊंट के लिए ज्यादा है इसलिए एक ऊंट और लाना चाहिए।

उसने अपने नौकरों से कहा, "तुम यहीं मेरा इन्तज़ार करो। मैं जाकर एक ऊंट और लाता हूं। यदि वर्षा हो तो चमड़े के कीमती थैलों का ध्यान रखना।"

यह कह कर सौदागर चला गया।
अचानक आकाश में काले बादल छा गये और बारिश होने लगी।
नौकर आपस में बोले, ''बारिश होने पर मालिक ने थैलों का ध्यान रखने के लिए कहा था।'' उन्होंने थैलों में से कपड़े निकाल लिए और उन्हें थैलों पर लपेट दिया।
थैले तो बच गये मगर कीमती कपड़े बिलकुल खराब हो गये।

रिसता हुआ बर्तन

एक आदमी ने नया नौकर रखा। एक दिन उसने नौकर को बुलाकर कहा, "बाज़ार जाओ और बर्तन में तेल ले आओ।"
नौकर बाज़ार गया और तेल खरीद लिया। वापस आते हुए उसे कुछ मित्र मिल गये। वे उसे चिढ़ाने लगे, "तेल का ध्यान रखो। बर्तन चू रहा है।"
नौकर झट से बर्तन को उलटा करके देखने लगा कि कहां से चू रहा है।
बर्तन उलटा करने से सारा तेल नीचे ज़मीन पर गिर गया और उसके मित्र उसकी मूर्खता पर हंसते-हंसते बेदम हो गये।